B.A (HONS), PART-I, PAPER-I

Social Structure

Describe the elements of Social Structure

सामाजिक संरचना के तत्वों की विवेचना करें।

समाजशास्त्र में स्पष्ट के रूप से संरचना की अवधारणा का प्रयोग हर्बर्ट स्पेन्सर ने अपनी पुस्तक 'Principles of Sociology' में किया। बाद में दुरखीम ने भी अपनी कृतियों में इस प्रयोग में लाया। परन्तु स्पष्ट रूप से इसकी व्याख्या करने का प्रयास रेडक्लिफ ब्राउन, कार्ल मानहीम, पारसन्स, मर्टन, जॉनसन जैसे समाजशास्त्रीयों ने अपनी कृतियों में किया।

समाजशास्त्रिक संरचना के तत्व (Elements of Social Structure):

सामाजिक संरचना के तत्वों की चर्चा करते हुए जॉनसन ने इसके निम्नलिखित तत्वों का उल्लेख किया है।

(i) विभिन्न प्रकार के उपसमूह, जो सम्बंधात्मक नियमों से जुड़े होते हैं। (Subgroup of various types interconnected by relational norms.)

(ii) बृहत तंत्र एवं उपसमूहों में पाई जाने वाली विभिन्न प्रकार की भूमिकाएँ (Roles of various types within the larger system and within the subgroups.)

(iii) विभिन्न उपसमूहों एवं सदस्यों की भूमिकाओं को नियंत्रित करने वाले नियम (Regulative norms governing subgroups and roles)

(iv) सांस्कृतिक मूल्य (Cultural values)

जॉनसन ने प्रत्येक तत्व की अलग उपस्थिति को आंशिक संरचना कहा जाता है।

(1) विभिन्न प्रकार के उपसमूह : जो संबंधात्मक नियमों से जुड़े होते हैं:- एक सामाजिक संरचना के अन्तर्गत अनेक प्रकार के छोटे बड़े समूह होते हैं, सामाजिक संरचना के अन्तर्गत समूह के साथ साथ उपसमूह भी विद्यमान होते हैं, जो व्यक्तियों के सामान्य हित एवं उसकी पूर्ति की दिशा में किये गये प्रयासों के फलस्वरूप बनते हैं। उदाहरणार्थ, महाविद्यालय जैसे संरचना समूह में अगर हम शिक्षकों को एक उपसमूह के रूप में समझते हैं तो शिक्षकों में भी प्रस्थिति (status) के आधार पर व्याख्याता, रीडर तथा प्रोफेसर

के रूप में अलग अलग उपसमूह पाये जाते हैं। ये सभी आपस में एक विशेष प्रकार के नियम से सम्बन्ध होते हैं।

(ii) बृहत तंत्र एवं उपसमूहों में पाई जाने वाली विभिन्न प्रकार की भूमिकाएँ — सामाजिक संरचना एवं उसके समूहों और उपसमूहों आदि के प्रत्येक सदस्य की एक निश्चित प्रस्थिति होती है और उसके अनुरूप उसकी एक भूमिका होती है। प्रस्थिति एक ही हो सकती है, किन्तु विभिन्न सदस्यों के संदर्भ में भूमिकाओं के अनेक प्रकार हो सकते हैं। दफ्तर के एक ऑफिसर की प्रस्थिति एक होते हुए भी विभिन्न कर्मचारियों के संदर्भ में उसकी अनेक भूमिकाएँ भूमिकाएँ हो सकती हैं, जैसे- अपने सहकर्मियों के संदर्भ में एक विशेष भूमिका, अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के संदर्भ में एक प्रकार भूमिका और अपने वरिष्ठ ऑफिसर के संदर्भ में भी एक अलग भूमिका। ये विभिन्न प्रकार की भूमिकाएँ ही सदस्यों के बीच सामाजिक संबंध के 'जाल' का निर्माण करती है। अतः ये विभिन्न प्रकार की भूमिकाएँ सामाजिक संरचना के महत्वपूर्ण तत्व हैं।

(iii) विभिन्न उपसमूहों एवं सदस्यों की भूमिकाओं को नियंत्रित करने वाले नियम — सामाजिक संरचना के विभिन्न उपसमूहों में सदस्यों की भूमिकाएँ निर्धारित रहती हैं। हमें किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिये इसका निर्णय सामाजिक नियम करते हैं। कभी कभी ये भूमिकाएँ अपेक्षित मूल्य के प्रतिकूल हो जाती है। सामाजिक संरचना को बनाये रखने के लिये व्यवहारों या भूमिकाओं को नियंत्रित करना आवश्यक है। नियंत्रित करने का कार्य भी समाज द्वारा स्वीकृत नियमों द्वारा होता है। अतः नियंत्रित करने वाले नियम भी सामाजिक संरचना के तत्व होते हैं।

(iv) सांस्कृति मूल्य — प्रत्येक सामाजिक संरचना में कुछ न कुछ सांस्कृतिक मूल्य आवश्यक होते हैं। ये सांस्कृतिक मूल्य समाज के आदर्श होते हैं। व्यवहारों के मूल्यांकन के लिये सांस्कृतिक मूल्य हमें मानदण्ड देते हैं। इस दृष्टि से सांस्कृतिक मूल्य सामाजिक संरचना का एक महत्वपूर्ण तत्व होता है।